L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- I
PSYCHOLOGY - (HONOURS)
TOPIC- verbal learning.

Dr. Pramod kumar sahu.
Assistant professor.
Guest Teacher.
V.S.J. college- Rajnagar
Madhubani (Bihar)
pramodkumardbg2018
@gmail.com.

part or Whole method of learning.

जब व्यक्ति किसी विषय को सीखता है तो उसके लिए वह कुछ प्रविधियों को अपनाता है। इसे हम सीखने की विधि कहते हैं। सीखने की अनेक विधियाँ हैं। जिसे व्यक्ति व्यवहार में लाता है। कुछ विधियाँ कठिन तथा कुछ सरल होती हैं। जो पाठ याद करने में सहायक होती हैं। इस संबंध में मनोवैज्ञानिकों ने सीखने की निम्नलिखित विधियों का वर्णन किया है।

(1) आंशिक एवं पूर्ण विधि से सीखना—

पाठ्य विषय को सीखने की अनेक विधियाँ हैं। उनमें आंशिक विधि भी एक है। अंश विधि से सीखने के लिए पाठ्य-विषय को कई टुकड़ों में बाँट कर सीखा जाता है। जैसे कोई तीन वाक्य की कविता है, उसे हम उस वाक्य के तीन खंडों में बाँट कर पहले खण्ड को याद करने के बाद दूसरे और फिर तीसरे खण्ड को सीखते हैं। इसे हम अंश-विधि कहते हैं। लम्बे विषय को सीखने के लिए अंश विधि काफी उपयुक्त होती है। इसमें विषय के प्रत्येक टुकड़े को बारी-बारी से सीखा जाता है और अन्त में पूरे विषय को एक साथ सीख लेते हैं। पूर्ण विधि से सीखने के लिए पूरे पाठ्य-विषय को एक साथ सीखा जाता है। कुछ विषय ऐसे होते हैं, जिनके एक अंश दूसरे अंश से काफी संबंधित होते हैं। ऐसी परिस्थिति में पूर्ण विधि से सीखना ठीक होता है। इससे विषय के एक अंश से दूसरे अंश के संबंधों का पता चलता है। किसी विषय को पूर्ण विधि से सीखा जाए या अंश विधि से इस बात को लेकर मनोवैज्ञानिकों ने अनेक प्रयोगात्मक अध्ययन किये, अंश विधि की अपेक्षा पूर्ण विधि ज्यादा उपयोगी है। जबकि पिकाटिन का कहना है कि पूर्ण विधि

Scanned with CamScanner

की अपेक्षा अंश विधि ज्यादा उपयुक्त होती है। वास्तव में दोनों विधियों में कुछ गुण एवं दोष है, किसी परिस्थिति में पूर्ण विधि ज्यादा उपयुक्त होती है, तो किसी परिस्थिति में अंश विधि। विषय को सीखने में विषय का स्वरूप एक मुख्य कारक है। यदि विषय को आसानी से कुछ टुकड़ों में बाँटा जा सकता है तो ऐसी स्थिति में अंश विधि लाभदायक सिद्ध होता है। जब विषय बहुत अधिक लम्बा हो तो उसे सीखने में भी अंश विधि ज्यादा उपयुक्त होती है। इस विधि की एक बहुत बड़ी विशेषता यह होती है कि प्रयोज्य जब विषय के एक भाग को याद कर लेता है। तो इससे उसमें संतोष होती है। जो दूसरे अंश के सीखने में सहायक होती है। वह इसी प्रेरणा के आधार पर आगे के भाग को भी सीखता है। Kingsley ने इसी आधार पर अंश विधि को श्रेष्ठ माना है। जिस बालक की बुद्धि मन्द होती है। उसके सीखने के लिए भी यह उपयुक्त विधि है। प्रारम्भ में अंश विधि लाभदायक होती है। लेकिन अभ्यास के कारण अभिप्रेरित हो जाने पर पूर्ण विधि श्रेष्ठ है।

कुछ परिस्थितियों में अंश विधि की तुलना में पूर्ण विधि ज्यादा कारगर साबित होता है। तीव्र बुद्धि वाले लोगों के लिए पूर्ण विधि से सीखना अच्छा होता है। इस बात का समर्थन मैक्क ने अपने अध्ययनों के आधार पर किया है। विषय की सार्थकता इस विधि का एक प्रमुख कारक है। जब विषय अर्थपूर्ण होता है, और अधिक लम्बा नहीं होता है, तो उसे पूर्ण विधि से सीखना अच्छा होता है। जब प्रयोज्य इस विधि के साथ अभ्यस्त हो जाता तो यह विधि लाभदायक साबित हुई।

(iii) विराम तथा अविराम विधि से सीखना:- अंश विधि में हमने देखा कि पाठ्य विषय को कई टुकड़ों में बाँट कर सीखते है। परन्तु

Scanned with CamScanner

विराम विधि में पाठ्य-विषय को नहीं, बल्कि सीखने के लिए निर्धारित समय को कुछ कई भागों में बाँट कर सीखते हैं। जैसे- यदि अध्ययन के लिए तीन घंटे की अवधि निर्धारित है। तो इसे आधा-आधा घंटा करके छः भागों में बाँटा जा सकता है। या फिर एक-एक घंटा करके तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। इस विधि से सीखने के लिए समय को टुकड़ों में बाँट कर उसके बीच विश्राम निकालते हैं। और विश्राम के बाद पुनः सीखते हैं। इससे सीखे गये विषय की स्मृति-चिह्न मजबूत होता है।

अविराम विधि में प्रयोज्य बिना विश्राम किये लगातार पाठ का अभ्यास करता है। उस पाठ का अभ्यास तब तक करता है जब तक कि उसे पूरी तरह से याद नहीं कर लेता है। इस विधि में समय को बाँटा नहीं जाता है।

विराम विधि तथा अविराम विधि के महत्व को देखने के लिए अनेक मनोवैज्ञानिकों ने प्रयोगात्मक अध्ययन किया है। अविराम विधि की अपेक्षा विराम विधि से सीखना ज्यादा उपयोगी होता है। लार्ज (Lorge) ने दर्पण आरेखन पर गति भिन्नता का अध्ययन किया उन्होंने यह देखा कि गति भिन्नता में विराम विधि ही ज्यादा उपयुक्त होता है। (Hovland) ने निरर्थक पदों की सूची पर अविरामित एवं विलम्बित विधि से अध्ययन किया इसके अध्ययन से भी विराम विधि को ही समर्थन मिला। वास्तव में अविराम विधि से विषय को सीखने में थकान एवं असमर्थता ज्यादा उत्पन्न होती है। जबकि विराम विधि में थकान एवं क्लान्ति अवरोध उत्पन्न नहीं होता है। इसलिए क्षमता कायम रहती है। और उत्पादन में ह्रास नहीं होता है। अविराम विधि से सीखते समय स्मृति चिह्नों को मजबूत होने का मौका नहीं मिलता है। पहले प्रयास में जो स्नायु प्रवाह बनता है। वह लगातार प्रयासों के आघात से कमजोर

होता है। जबकि विमर्श विधि में यह बात नहीं होती है।

(3) पुनर्निरीक्षण एवं आवृत्तिकरण विधि से सीखना-
किसी विषय को सीखने के लिए साधारणतः बार-बार दुहराने की आवश्यकता होती है। एक बार विषय को सीख लेने के बाद उसे दुहराना आवृत्तिकरण कहलाता है। यह सीखने की एक बहुत सरल विधि है। यदि आवृत्तिकरण की लम्बी कड़ी टूटती है तो पुनः उसकी पुनर्निरीक्षण करता है। जिससे उसे पता चल जाता है कि आवृत्तिकरण के समय वह सीखे गये विषय के किसी अंश को भूल रहा था। अतः आवृत्तिकरण में पुनर्निरीक्षण की क्रिया भी शामिल रहती है। कुछ लोगों ने तो इसे अलग नहीं मानकर आवृत्तिकरण के अंतर्गत इसे स्वीकार किया है। सीखने के लिए पठन और आवृत्तिकरण दोनों का सहारा लिया जाए तो स्मरण शक्ति पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। परन्तु यही यह भी विचारणीय है।

Dr. Pramod Kumar Singh
Date 16/07/2020